



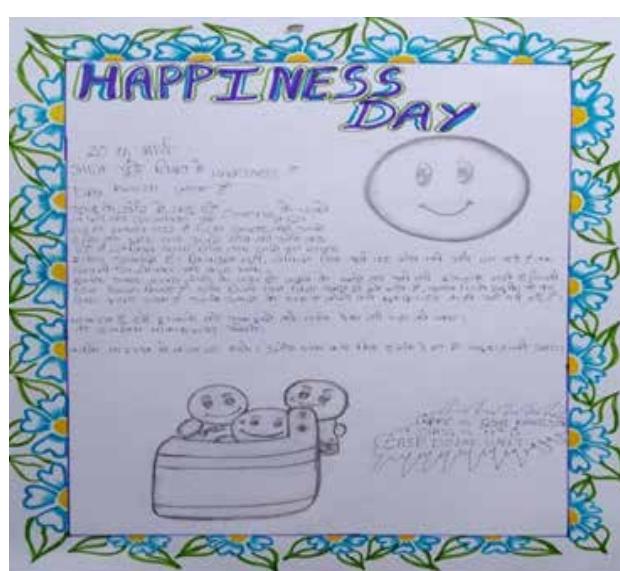
लाक्न धेर ल

नमस्कार दोस्तों आषा है कि आप सभी अच्छे होंगे, जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में स्थिति अच्छी नहीं है, खासकर हमारे षहर दिल्ली में, कोविड -19 की दूसरी लहर के कारण, बहुत से लोग पीड़ित हैं और कई ने अपने प्रियजनों को खो दिया है। यह हम सभी के लिए कठिन समय है, इसलिए हमें मिलकर भारत सरकार द्वारा जारी किए गए सभी प्रोटोकॉल का पालन करते हुए कोरोना के खिलाफ इस लड़ाई को लड़ना चाहिए और एक दिन जल्द ही आएगा जब हम सभी अपने सामान्य जीवन में वापस आ जाएंगे।





Happiness Day



20 मार्च को पूरी दुनिया में इंटरनेशनल डे ऑफ हैप्पीनेस मनाया जाता है। यह 28 जून 2012 को संयुक्त राश्ट्र महासभा द्वारा स्थापित किया गया था। अंतर्राष्ट्रीय खुषी दिवस का उद्देश्य दुनिया भर के लोगों को उनके जीवन में खुषी के महत्व का एहसास कराना है।

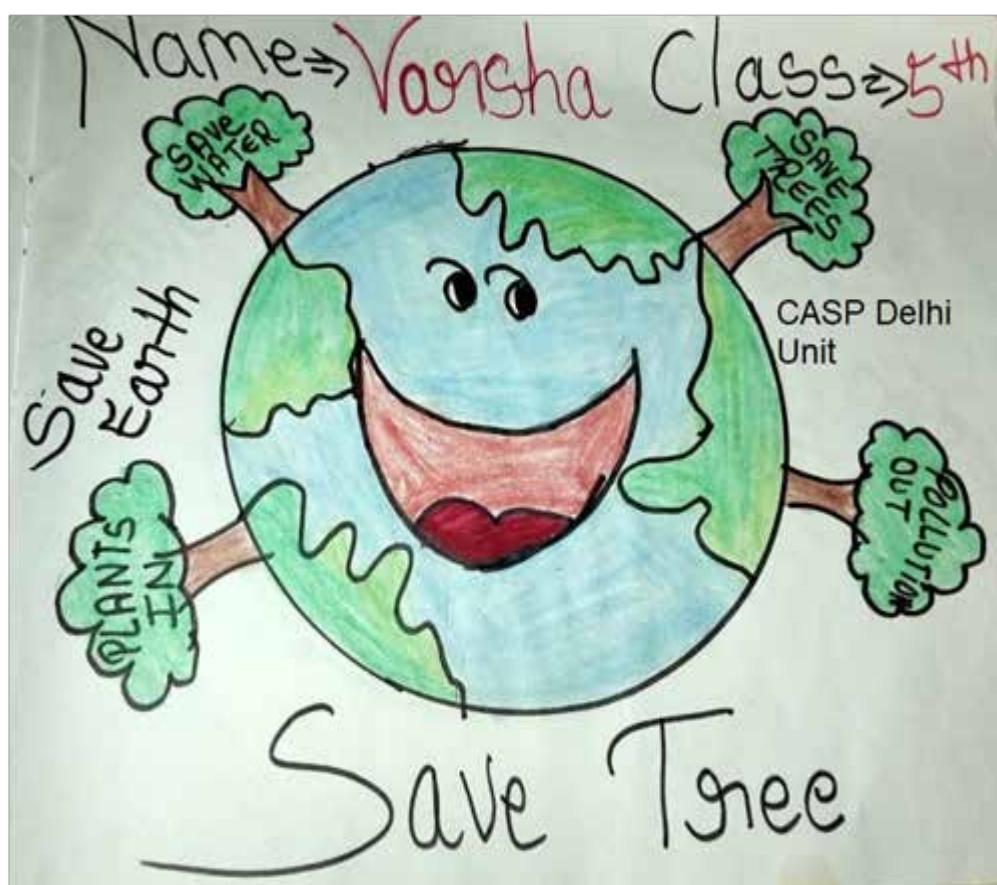
यह खुषी के अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर दोस्तों और परिवार के साथ खुषी साझा करता है। ध्यान देने और सराहना करने के लिए समय निकालना, जिसके लिए खुद को आभारी होना चाहिए, यहां तक कि छोटी चीजें भी, लोगों को जीवन में अद्वितीय खुश और अधिक पूर्ण महसूस कराएंगी। इसे एक दैनिक आदत बनाने पर विचार करें, जैसे कृतज्ञता लॉग रखना। हमें प्रियजनों के साथ समय बिताना चाहिए और किसी भी रिष्टे को सुधारने की कोषिष्ठ करनी चाहिए जो कठिन दौर से गुजर रहा है क्योंकि अच्छी गुणवत्ता वाले रिष्टे खुषी के लिए महत्वपूर्ण हैं। चरण—दर—चरण कार्यक्रम का प्रयास करें, जहां आप दैनिक आधार पर समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से मिलते हैं ताकि कार्रवाई करने और स्वस्थ जीवन जीने में एक—दूसरे की सहायता की जा सके। आप किसी ऐसे चौरिटी को दान या काम भी कर सकते हैं जो आपके चुने हुए अच्छे कामों को प्रोत्साहित करता हो। सोशल नेटवर्किंग दूसरों से जुड़ने का एक और तरीका है। यह इस दिन एक विषेश रूप से घक्षिषाली उपकरण है क्योंकि यह हमें अपनी गतिविधियों को तुरंत साझा करने और फैलाने में मदद करता है, साथ ही वे जो आनंद लाते हैं, वह पूरी दुनिया में हैं।

gekjst hou ea i kkkavkj i Mdk egRo

By –Varsha (Casp Delhi Unit)

पेड़ और पौधे हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्या आप जानते हैं कि गरारे करने से हमें खुद को तनाव मुक्त रखने में भी मदद मिलती है। लेकिन यह देखकर बहुत दुख होता है कि षहरों में, पेड़ों की संख्या कम हो रही है, पेड़ हर समुदाय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

हमारी सड़कों, पार्कों, खेल के मैदानों और बैक्यार्ड को पेड़ों के साथ पंक्तिबद्ध किया गया है जो एक धार्तिपूर्ण, रूप से सुखदायक वातावरण बनाते हैं। पेड़ प्राकृतिक तत्वों और वन्यजीवों के आवासों को शहरी सेटिंग में लाकर हमारे जीवन स्तर को बढ़ाते हैं। हम परिवार और दोस्तों के साथ बाहरी गतिविधियों के दौरान प्रदान की जाने वाली ठंडी छाँव के नीचे इकट्ठा होते हैं। कई पड़ोस बहुत पुराने पेड़ों का घर भी हैं जो ऐतिहासिक स्थलों और षहर के गौरव का एक बड़ा स्रोत हैं। षहरों में पेड़ों का उपयोग सूरज की रोषनी को विक्षेपित करने के लिए फुटपाथ और व्यावसायिक इमारतों के कारण होने वाले ताप द्वीप प्रभाव को कम करता है।





Tribute to corona warriors

By- Rekha (CASP Delhi Unit)

Amid the Covid-19 pandemic, not only doctors, nurses, and ward boys but our delivery persons, ration shop owners, and vegetable-fruits vendors, etc., have played a crucial role by providing us timely access to all the necessary items important for survival during all the months of the pandemic.

Since the outbreak of the Covid-19 pandemic, timely delivery of essential services by taking all precautionary measures to curb the spread of the virus. Therefore, let us thank these coronavirus helpers who have been making our lives smooth during the ongoing pandemic.

As thanking somebody is the biggest form of appreciation and motivation, send these quotes and messages to doctors, nurses, delivery staff, farmers, teachers, researchers, sanitation workers, grocery workers, and emergency services workers, and others who have been constantly assisting in the fight against the Coronavirus.

Thank you messages for Coronavirus helpers



Thanksgiving is the greatest form of gratitude. We want to thank you today!

Thankyou corona warriors!

I want to thank you for saving me and my family by working tirelessly. Heartfelt Thank you!

Though the times have been difficult, your dedication towards your work did not shake a bit. I highly appreciate your work. Thank you!

I want to thank you for your crucial help. Sending you warm thanksgiving

ykmMmu& gkf u rFkk ykk

Mayank Dahiya (UDYAM TRUST)

लॉकडाउन शब्द का मतलब हैं तालाबंदी जिसके अनुसार सभी को अपने—अपने घरों में रहने की सलह दी जाती हैं। लॉकडाउन का निर्णय



इसलिए लिया गया हैं क्योंकि कोरोना वायरस छूने मात्र से हि एक संक्रित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। अब पूरा देश इस वायरस से लड़ने के लिए अपने—अपने घरों में कैद हो गया है। इस महामारी कि वजह से लाखों लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। और इससे बचने का सिर्फ एक ही रास्ता हैं और वो हैं समाजिक दूरी इसलिए भारत सरकार ने लॉकडाउन को कोरोना वायरस से बचने के लिए आवश्यक कहा हैं।

लॉकडाउन एक आपातकालीन व्यक्ति है। जो किसी आपदा या महामारी के समय लागू की जाती है। जिस क्षेत्र में लॉकडाउन लगाया जाता है। उस क्षेत्र के लोगों को घर से बाहर निकलने कि अनुमति नहीं होती है। वे केवल ज़रूरी काम के लिये हि बाहर जा सकते हैं। लॉकडाउन के समय कोई भी व्यक्ति किसी भी अनावश्यक कार्य के लिए बाहर नहीं निकल सकता है।

इस महामारी से पहले जब लॉकडाउन नहीं होता था सभी व्यक्ति अपने निजी और व्यवसायिक कार्यों में व्यस्थ रहते थे वे अपने परिवार को या अपने आप को भी समय नहीं देते थे। लेकिन लॉकडाउन ने एक ऐसा अवसर प्रदान किया हैं कि लोग अब अपने परिवार के साथ समय व्यतीत कर रहे हैं। बच्चों को भी अपने माता—पिता के साथ समय व्यतीत करने का अवसर मिल रहा है। वे लोग जो खाना बनाने के शोकीन हैं वे यू—ट्यूब के माध्यम से खाना बनाना भी सीख रहे हैं। सभी परिवार के सदस्य एक साथ समय व्यतीत करके जीवन का आनन्द ले रहे हैं। समय व्यतीत करने के लिए बड़े लोग बच्चों के साथ केरम, लूडो आदि जैसे इनडोर गेम खेल रहे हैं। बच्चों कि शिक्षा में किसी प्रकार कि कोई कमी न हो इस लिये शिक्षक ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के माध्यम से पड़ा रहे हैं। लॉकडाउन से पूर्व वायु, ध्वनि और जल प्रदूषण काफी बड़ चुका था लेकिन लॉकडाउन के बाद इसमें काफी कमी दर्ज की गई हैं।

लॉकडाउन के अगर कुछ लाभ हैं तो इसके कारण कुछ हानि भी हुई है। मज़दूरों और रोजाना खाने कमाने वाले श्रमिकों ने अपना रोजगार खोया हैं। जमा पूंजी न होने के कारण ये काफी कठनाईयों का सामना कर रहे हैं।

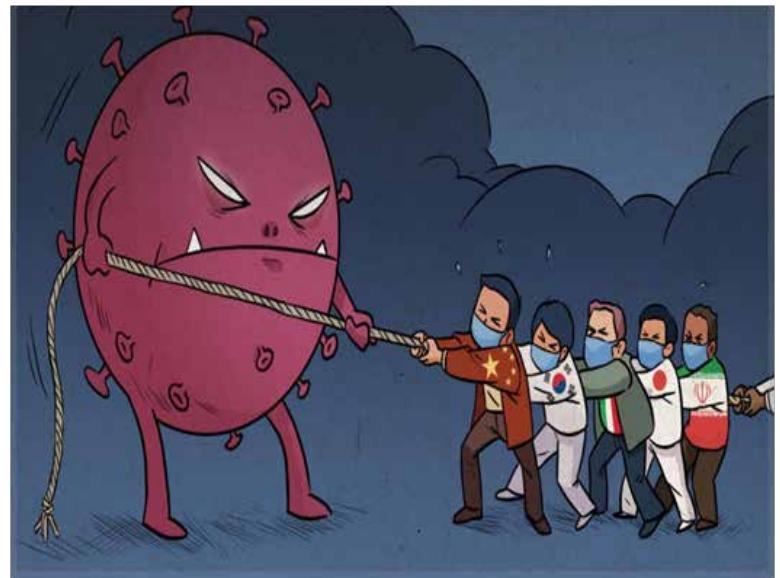
लॉकडाउन के कारण देश कि अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान पहुचा है। कारखानों और उद्योगों के बन्द होने के कारण काफी लोगों कि नोकरीयॉ जा चुकि हैं। अब हमारा देश आर्थिक रूप से भी कमज़ोर हो चुका है।

dkjuk ok j l

Vishnu (UDYAM TRUST)

कोरोना वायरस पूरी दुनिया में फैल रहा है। इस वायरस से बहुत सारे लोग मर रहे हैं। इस दोरान हम लोगों को बहुत सावधान रहना चाहिए। बार—बार साबुन से अच्छी तरह हाथ धोते रहना चाहिए। क्योंकि कोरोना वायरस बहुत ही खतरनाक बीमारी है। इस बीमारी से बहुत लोग पीड़ित हैं। कोरोना वायरस कि वजह से हम

लोगों का बहुत नुकसान हो रहा है। इस बीमारी कि वजह से हम सभी बच्चे काफी परेशान हैं। क्योंकि हमारी अच्छी तरह से पढ़ाई नहीं हो रही है। इस लिये बहुत सारे बच्चों को नुकसान हो रहा है। कोरोना वायरस संक्रित व्यक्ति के संपर्क में आने से फेलता है। इस बीमारी कि वजह से हम सभी को मारक भी लगाना पढ़ रहा है।





ykWIMku ds Qk ns rFkk uqd1 ku

Pooja Soni (UDYAM TRUST)

कोरोना वायरस दुनिया के लगभग सभी देशों में फैल चुका है। इस बीमारी के कारण बहुत सारे लोगों कि मृत्यु भी हो चुकी हैं। सन 2020 के अन्त तक एसा लग रहा था कि कोरोना वायरस पर नियंत्रण पाया जा चुका है। पर सन 2021 के मार्च महीने के अंत में इस बीमारी की दूसरी



लहर ने दस्तक दी और यह लहर पहले से ज्यादा धातक सिद्ध हो रही है। जिसकी वजह से दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवल ने लॉकडाउन लगा दिया हैं ताकी लोग इस बीमारी से बच सके। लेकिन दुकानदार इस लॉकडाउन का काफी फायदा उठा रहे हैं। वे सभी सामान को ज्यादा मुल्य पर बैच रहे हैं। इस लॉकडाउन का सब से ज्यादा नुकसान हुआ हैं उनके जिनके रोजगार खत्म हो गये हैं। और उनके पास सारी जमा पूँजी भी खत्म हो गई हैं। गरीब लोगों के पास इलाज का पैसा नहीं है। अगर वो संकमित होते हैं और गंभीरता बढ़ती हैं। तो वो असाहय हो जाते हैं।

ykWIMku

भारत में 23 मार्च 2020 से कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन लगने कि शुरुआत हुई। जिसकी वजह से काफी लोग अपना रोजगार खो चुके हैं। कोरोना वायरस एक संकमण हैं जो एक संकमित व्यक्ति से दूसरे स्वस्थ व्यक्ति में आसानी से फैलता है। लोगों को डर हैं कि कही यह बीमारी मुझे या मेरे परिवार को न हो जाए इस लिए वे बाहर नहीं निकलते हैं और न ही काम की तलाश करते हैं। लॉकडाउन में पढ़ाई ऑनलाईन होती हैं लेकिन वे बच्चे जो ऑनलाईन क्लास में किसी भी कारण उपस्थित नहीं रहते हैं उन बच्चों



का पढ़ाई में काफी नुकसान होता है। वो बच्चे जो सेल्फ स्टडी करते हैं वो ही ऑनलाईन क्लास में उपस्थित रहते हैं। लॉकडाउन कि वजह से वाहन नहीं चल रहे हैं जिसकी वजह से वायु प्रदूषण काफी कम हो गया है। कारखानों के बन्द होने कि वजह से नदियों का पानी भी साफ हो गया है। वायु प्रदूषण कम होने के कारण औज़ोन परत को भी काफी लाभ पहुँचो हैं।

dkjuk ok j1

Itisha, Tanu And Ashu (Udyam Trust)

इस महामारी कि वजह से सबसे ज्यादा नुकसान हमारी शिक्षा को हुआ है। जब से यह महामारी आई हैं हमारे स्कूल बन्द हो गए हैं और हम ऑनलाईन के माध्यम से शिक्षा ले रहे हैं। जिसकी वजह से हमारे स्कूल के मित्रों से मिलना और उन के साथ तफरी करना सब खत्म हो गया है। इसके साथ-साथ हमारा खेलना और घूमना भी बन्द हो गया है। हमारी दीदी हमें ऑनलाईन क्लास में बहुत अच्छे से समझाती हैं लेकिन फिर भी हमें उतना समझ नहीं आता। लॉकडाउन लगने कि वजह से अधिकतर दुकाने बन्द रहती हैं। ज्यादातर लोगों ने अपने रोजगार भी खो दिये हैं। लेकिन समझदारी इसी में हैं कि घर पर रहें और लॉकडाउन के नियमों का पालन करें।

लॉकडाउन से पहले कि बात करे तो हम उस समय अपने कार्यों में इतने व्यस्थ थे कि अपने परिवार के लिए कभी समय नहीं निकालते थे पर लॉकडाउन के कारण हमें उन के साथ समय गुजारने को मिला। कई यादें ताज़ा हुई और कुछ यादगार लम्हे भी बने। काफी चीज़े सीखने को भी मिली जैसे खाना बनाना, काफट एक्टिविटिज़, आदि। लॉकडाउन कि वजह से मज़दूरों का काफी नुकसान हुआ है। क्योंकि उनका रोज़गार खत्म हो गया है। दो वक्त का खाने का इंतज़ाम करने के लिए उन्हें काफी मुश्किल हो रही हैं।

लॉकडाउन के अगर कुछ लाभ हैं तो साथ ही साथ कुछ नुकसान भी हैं। लॉकडाउन के कारण मज़दूर और वे लोग जो रोज़ कमाकर अपने घर के सदस्यों का पेट पालते थे आज उनके लिए अपने परिवार के लिए खाने का इंतज़ाम करना एक चुनौति हो गया है। लोगों कि नोकरी जाने और व्यापार ठप होने कि वजह से बेरोज़गारी का स्तर काफी बढ़ गया है। स्कूल बन्द होने कि वजह से ऑनलाईन क्लास हो रही हैं। लेकिन नेटवर्क या इन्टरनेट कि समस्या कि वजह से बहुत सारी क्लासें छूट जाती हैं। जिससे पढ़ाई का काफी नुकसान होता है। लॉकडाउन कि वजह से वाहन कम चलने के कारण वायु प्रदूषण

का स्तर काफी कम हुआ है। लॉकडाउन ने कोरोना संक्रमण को भी कम किया है। कारखाने और फेक्टरीयों के बन्द होने कि वजह से इन से निकलने वाला गन्दा पानी और कूड़ा अब नदियों में नहीं डाला जा रहा है। जिसकी वजह से जल प्रदूषण का स्तर भी काफी घटा है।

लॉकडाउन कि वजह से हम अपने घरों में सुरक्षित रहते हैं। दूसरी लहर में कोरोना वायरस संक्रमण और इसके कारण मृत्यु का आकड़ा काफी तेज़ी से बढ़ा है। इस बीमारी से सुरक्षित रहने के लिए हमें लॉकडाउन के नियमों का पालन करना चाहिए। लॉकडाउन का असर गरीबो और मिडिल क्लास लोगों पर काफी पड़ा है। क्योंकि लॉकडाउन कि वजह से सभी कारखाने और कम्पनीयां बन्द हो गयी हैं। जिसकी वजह से काफी लोग बेरोज़गार हो गये हैं। अगर किसी घर में एक व्यक्ति कमाने वाला हों और वह बेरोज़गार हो जाए तो उस परिवार को काफी परेशानीयों का सामना करना पड़ता है। बच्चे और बड़े पर इसका समान प्रभाव पड़ा है। बहुत सारे लोग शहर से गांव कि तरफ पलायन कर चुके हैं। इस वजह से बच्चों कि शिक्षा पर काफी असर पड़ा है। कुछ बच्चे आर्थिक तंगी कि वजह से ड्रोप आउट हो चुके हैं। में उड़यम संस्था से जुड़ी हुई हूँ। उड़यम कि ऑनलाईन क्लास से मुझे अपनी पढ़ाई जारी रखने में काफी मदद मिली है। कोरोना वायरस संक्रमण कि वजह से हमारा जीवन बदल सा गया हैं जैसे कि हम अब भीड़ वाली जगह पर जाने से बचते हैं और अब हम पार्क में भी नहीं खेल सकते हैं। परन्तु इस बीमारी को हराने के लिए हमें कोरोना से बचने के सभी नियमों का पालन करना चाहिए।

vkWykbZi f' kikk

Meenakshi (Udyam Trust)

जब से लॉकडाउन लगा हैं तब से हमारे स्कूल बन्द हो गये हैं। पढ़ाई भी ऑनलाईन के माध्यम से हो रही हैं। ऑनलाईन एजुकेशन के कुछ फायदे हैं तो कुछ नुकसान भी। सबसे बड़ा फायदा हैं कि स्कूल बन्द होने से हमारी पढ़ाई रुकी नहीं। हम ऑनलाईन एजुकेशन में हर दिन कुछ न कुछ सीखते हैं। लेकिन कई कारणों से कुछ बच्चे ऑनलाईन क्लास में उपस्थित नहीं रहते हैं और कुछ बच्चे होमवर्क भी नहीं करते हैं। ऑनलाईन एजुकेशन में हमें उतना समझ नहीं आता जितना हमें फेस टू फेस क्लास में समझ आता था। पिछले साल में ने पहली बार कोरोना वायरस का नाम सुना और पहली बार लॉकडाउन देखा। शुरुआत में तो काफी अच्छा लगा क्योंकि घर पर सभी सदस्यों के साथ समय व्यतीत करने

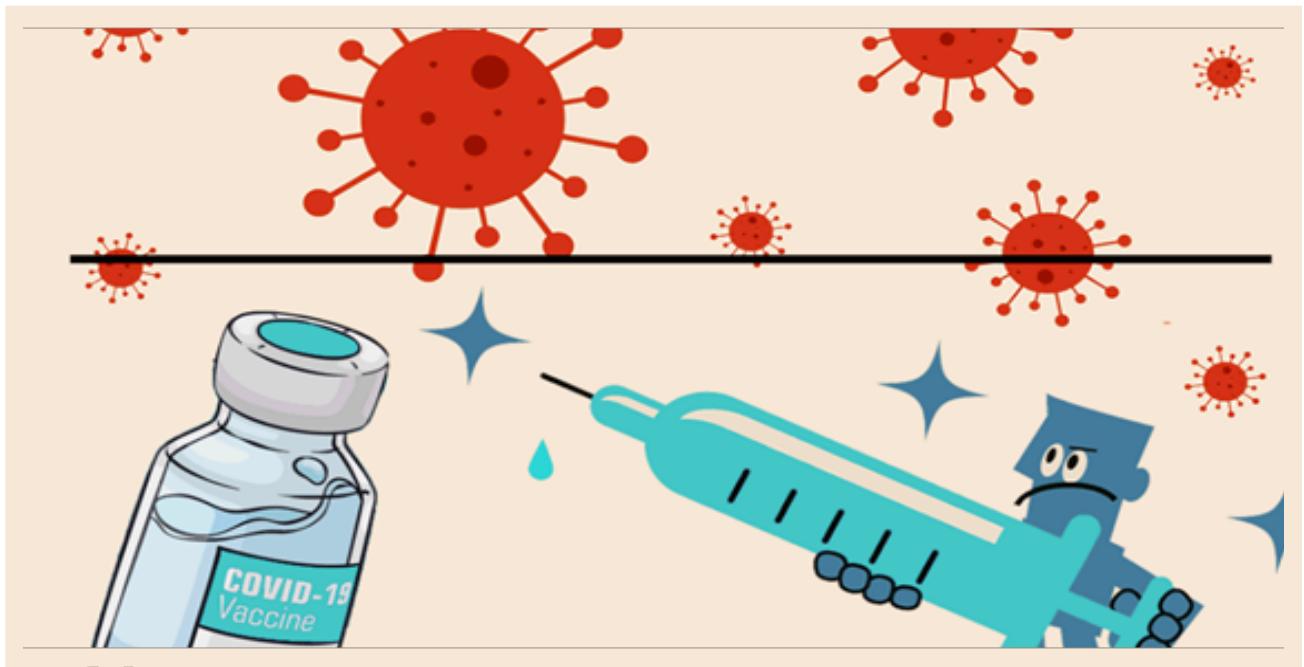


का मोका मिला। हम सभी घर पर एक साथ इनडोर गेम खेलते थे। घर में नई—नई डिश खाने के लिए बनती थी। खबरों के माध्यम से यह पता चल रहा था कि लॉकडाउन के दोस्रान बहुत सारे लोगों को काफी परेशानीयों का सामना करना पड़ा और कुछ लोग इन लोगों कि मदद भी कर रहे थे। लॉकडाउन के नियमों का पालन करने कि वजह से कोरोना संक्रमण में काफी कमी हुई और जीवन फिर से सामान्य हो गया। लोगों को फिर से अपने रोज़गार मिल गये और वे काम पर जाने लगे। स्कूल भी खुलना शुरू हो गये थे। परन्तु कोरोना से बचने के नियमों का लोग अनदेखी करने लगे और कोरोना संक्रमित लोगों कि संख्या फिर से बहुत तेज़ी से बढ़ने लगी। यह दर इतनी ज्यादा थी कि अस्पतालों में बेड कि संख्या, ऑक्सिजन और दूसरे ज़रूरी सामान कि कमी होने लगी। इस बिमारी को रोकने के लिए राज्य सरकारों ने फिर से लॉकडाउन लगाया है। यह समय मज़दूरों के लिए काफी मुश्किल का है। इसलिए वे अपने गांव वापिस जा रहे हैं। इस समय आवश्यकता है कि हम सभी कोरोना के नियमों का पालन करे, वैक्सीन लगवाए और ज़रुरतमंद लोगों कि मदद करें। जो लोग इस समय दवाईयों और दूसरे ज़रूरी सामानों कि काला बज़ारी कर रहे हैं वे यह न करे बल्कि इस कोरोना को हराने में डॉक्टरों कि मदद करें ताकि हम बच्चे वापिस स्कूल जा सके और आज़ादी से खेल सके।



जब से लॉकडाउन लगा है। हमारे स्कूल बन्द हो गए हैं। अब हम ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे हैं। शुरू में तो कुछ समझ नहीं आता था परन्तु अब आदत हो गई है और मज़ा भी आता है। लेकिन हमारे पास एक ही स्मार्ट फोन हैं और कभी—कभी नेटवर्क चला जाता है या किसी कि कॉल आ जाती हैं या घर के किसी सदस्यों को कोई अर्जेंट काम होता है तब हमारी पढ़ाई में रुकावट आ जाती है।

ऑनलाइन शिक्षा के कुछ फायदे भी हैं जैसे हमें टेक्नोलोजी का इस्तिमाल अच्छे से आ गया है। हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि इतनी दूर—दूर होकर भी पढ़ाई कर सकते हैं।



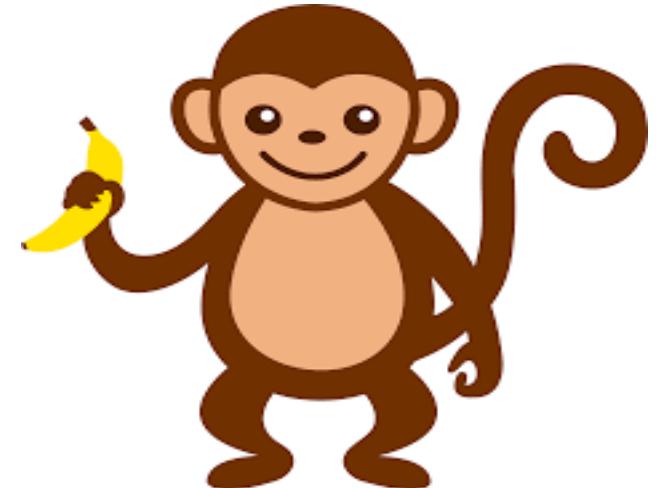
osl hu

इमामुदीन

नमस्कार दोस्तों मेरा नाम इमामुदीन हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि कोरोना वैक्सीन लगवाना चाहिए या नहीं। कोरोना वायरस चीन के वुहान शहर से निकलकर लगभग सभी देशों में तबाही मचा चुका है। इसकी वजह से काफी लोग अपनी जान गवा चुके हैं। सभी देशों के वैज्ञानिकों ने शोध करने का बाद इस वायरस की रोकथाम करने के लिए वैक्सीन कि खोज की है। भारत के वैज्ञानिकों ने भी वैक्सीन खोज ली हैं। इस वैक्सीन को लगवाने के लिए ऑनलाइन पंजीकरण करना होता है। वैक्सीन लगवाने से कोरोना वायरस से संक्रमित होने के सम्भावनाएं काफी कम हो जाती हैं। यदि कोई व्यक्ति इस वैक्सीन को नहीं लगवाता है तो वह अपने साथ—साथ अपने परिवार और दूसरों की जान को भी खतरे में डालता है। अब आप समझ ही चुके होंगे कि वैक्सीन लगवाना कितना आवश्यक है।

ekd dk mi ; lk

कोरोना वायरस को लेकर दुनिया भर में डर का माहोल है। जिसके कारण दुनिया में मास्क की मांग बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। क्योंकि मास्क कोरोना वायरस को फैलने से रोकने का एक उपाय है इसलिए हमारी सरकार भी लोगों को मास्क लगाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। साथ ही साथ यह भी बताया जा रहा है कि मास्क को कैसे सेनिटाईज़ करें। लोग भी अब मास्क के महत्व को समझ चुके हैं। और वायरस से बचने के लिए इस का उपयोग ज्यादा से ज्यादा कर रहे हैं। मास्क पहनते समय हमें कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए जैसे— मास्क को बार—बार ठच न करना, उपयोग करने के बाद मास्क को साबुन से धोना और साफ मास्क का ही उपयोग करना।



cnj dh bPNk

एक बार एक बंदर को उदासी के कारण मरने कि इच्छा हुई। उसने एक सोते हुए शेर के कान खींचे। शेर उठा और गुरसे से दहाड़ा कौन है। किसने अपनी मौत बुलाई है। बंदर बोला मैं हूँ महाराज ! दोस्तों के अभाव में अत्यधिक उदास हूँ। मैं मरना चाहता हूँ। आप मुझे खा लीजिये। शेर ने हसते हुए पूछा मेरे कान खींचते हुए किसी ने देखा क्या ? बंदर बोला नहीं महाराज किसी ने नहीं देखा। शेर ने कहा एक—दो बार और खींचो अच्छा लग रहा है। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अकेले रहने से जंगल का राजा भी बोर हो जाता है। इसलिए अपने दोस्तों के संपर्क में रहे। एक—दूसरे के कान खींचते रहे। सुस्त न रहे और इस तरह मरती करते रहे। अपने मित्रों और परिवार के सदस्यों से संपर्क बनाकर रखे और सदैव खुश रहे।

caj fd ekby dh nqku

RAJ (BUTTERFLIES)

एक बार कि बात हैं कि एक जंगल में एक बंदर रहता था। वह बंदर बहुत दुखी रहा करता था। एक बार उसे भूख लग गई और बंदर खाने कि तलाश में शहर जा पहुंचा। उसको वहां पर मोबाइल कि दुकान दिखाई दी। वहाँ पर काफी भीड़ थी। उसके मन में विचार आया कि वह भी जंगल में जाकर एक मोबाइल की दुकान खोलेगा। वह रात में उस दुकान से मोबाइल चुरा ले गया और अगली ही सुबह उसने दुकान खोल ली। सबसे पहले भेड़िया आया और वह रेडमी का मोबाइल लेकर चला गया। भेड़िये ने हाथी को बताया और हाथी भी मोबाइल लेने दुकान पर आया। हाथी ने सेमसंग का मोबाइल लिया। बंदर अब बहुत खुश था। और वह मन ही मन सोचने लगा कि ऐसे ही मोबाइल बेचकर वह बहुत अमीर हो जाएगा। बंदर कि मोबाइल की दुकान के बारे में सभी जानवरों को पता चल गया। अंत में जंगल के राजा शेर तक यह बात पहुंची। शेर ने जानवरों से कहा कि बंदर को हमारे पास लेकर आओ। सभी जानवर बंदर के पास पहुंचे और उसे शेर के पास ले गये। शेर ने कहा कि मैंने सुना हैं कि तुम मोबाइल बेचते हो। बंदर बोला जी महाराज में मोबाइल बेचता हूँ। क्या आपको मोबाइल चाहिए? शेर बोला हा दे दो। बंदर ने शेर को सबसे कीमती मोबाइल दिया। जनवरों ने मोबाइल पर कई तरह के गेम खेलना शुरू कर दिया। कई दिनों के बाद एक मैना उड़ती हुई आई और शेर से बोली, महाराज! महाराज! जंगल में शिकारी आ पहुंचे हैं। शेर ने वाट्स एप के माध्यम से सभी जानवरों को बता दिया और सारे जानवर छिप गये। शिकारी जंगल में पहुंचते हैं। तथा वह एक दिन गुजारते हैं। जब वह शिकार करने के लिए जाते हैं। लेकिन उन्हें एक भी जानवर नहीं मिलता तब शिकारी सोचता हैं। क्या जंगल में एक भी जानवर नहीं हैं? तभी एक शिकारी को मोर दिखता है। जैसे ही शिकारी मोर को मारने जाते हैं। तभी मोबाइल की घंटी बजती है। सभी शिकारी सोचने लगते हैं कि यह अवाज़ कहाँ से आ रही है। तभी उन्हें पता लगता हैं कि यह अवाज़ तो मोर के पास से आ रही है। सभी शिकारी सोचने लगते हैं कि जिस जंगल में जानवरों के पास मोबाइल हैं वे कितने खतरनाक होंगे। सभी शिकारी यह सोचकर जंगल से भाग जाते हैं।

शिक्षा – कठिनाई के समय चतुराई से काम करना चाहिए



ykW Mmu ds i Hko

जब कोरोना संक्रमण फैलना शुरू हुआ। तब यह कभी नहीं सोचा था कि एसा लॉकडाउन लगेगा। लॉकडाउन कि वजह से सभी स्कूल और कॉलिज बंद हो गए। सभी बच्चे और उनके परिवार वाले शिक्षा को लेकर काफी चिंतित थे। सरकार ने ऑनलाइन शिक्षा कि व्यवस्था की और आज भी हम बच्चे ऑनलाइन ही पढ़ रहे हैं। परन्तु ऑनलाइन शिक्षा उतनी सफल नहीं है। क्योंकि कक्षा में सभी बच्चे ध्यान लगाकर पढ़ते हैं लेकिन ऑनलाइन शिक्षा में बहुत सारे कारणों कि वजह से सभी बच्चे भाग नहीं ले पाते हैं।

रोजगार खत्म होने कि वजह से बहुत से लोगों को दो समय के भोजन की व्यवस्था करने में काफी परेशानियों का सामना करना पढ़ता है। पहले तो कुछ जमा पूँजी की मदद से खाने की व्यवस्था कर पा रहे थे। लेकिन बाद में काफी परेशानीयों का सामना करना पढ़ा।

पार्क बंद होने कि वजह से घर पर ही योग किया जिससे मानसिक तानव को कम करने में काफी मदद मिली।

dkj kik vks yki jokgh

हम सब का पिछला पूरा साल बंदिशों व चिंताओं के साथ निकालने के बाद जब इस साल के शुरुआत में हमें कुछ राहत के संकेत मिले तो हम भी कहीं न कहीं बेफिक और लापरवाह हो गए।

कोरोना के केस कम होने पर हम में से ज्यादातर लोगों को लगने लगा कि कोरोना ने हमारे देश को छोड़कर विदेशों का रुख कर लिया है। पर हम यह भूल गये थे। कि यह तो अभी फोरी राहत है। हमें बहुत सावधानी के साथ चलना था। लेकिन हम सभी के लापरवाह भरे व्यवहार ने स्थिति को खराब कर दिया। अब पता नहीं आगे का यह साल किस प्रकार गुजरेगा?

जैसा कि मैंने पहले कल्पना कि थी कि मई या जून तक सब ठीक हो जाएगा। और हम पहले कि तरह स्कूल जा पाएंगे। अपने दोस्तों से पहले कि तरह मिल पाएंगे। हम पहले कि तरह अपना जीवन जी पाएंगे।

लेकिन ठीक इसके विपरीत मार्च के महीने में केस बढ़ने कि वजह से हालात फिर से खराब

हो गए। अब भी हमें लोगों का लापरवाह व्यवहार देखने को मिल रहा है। जो कि आगे के लिए नुकसानदायक हो सकता है। हमें ज़रूरत है कि इस मुश्किल घड़ी में सावधान और सतर्क रहें और सरकार का सहियोग दे।



ge fdruk t kurs g

क. जम्मू-कश्मीर में किस नदी पर दुनिया का सबसे उच्च रेलवे ब्रिज का निर्माण किया गया है।

ख. भारत ने किस देश को 100 करोड़ रुपय का गश्ती पोत पी एस जोरेस्टर उपहार में दिया।

ग. हाल ही में किस केंद्र शासित प्रदेश को छ्य रोग मुक्त किया गया है।

घ. पीठ हैं मेरी मोटी, दृत हैं मेरे तीखे। मोटी-मोटी लकड़ीयों को एक झटके में चीरे।

ड. रात दिन हैं मेरा तुम्हारे घर में डेरा, रोज मीठे गीत से करती नया सवेरा।

च. तीन अक्षर का नाम हैं। आगे से पढ़ो या पीछे से एक समान हैं।





dfork

सामिया—बटरफ्लाईज

कोरोना आया है।

एक किटाणु ने आतंक फैलाया है।

लोगों का रोजगार छीना है।

गरीब की रोटी छीनी है।।

मजदूरों को चलाया है।

भोजन के लिए दर-दर भटकाया है।

सदमे में बच्चे हैं।

पढ़ाई हो गई ऑनलाइन।

मोबाइल नहीं पास, कैसे इसे फेस करे।

नया खरीदे कैसे, पैसे नहीं हैं पास।

मुश्किल हो गया खर्च चलाना।

जब से हैं कोरोना आया।

पर तुम हिम्मत मत हारना।

वक्त हैं बुरा टल जाएगा।

फिर एक नया सवेरा आयेगा।

फिर से सब पहले जैसा हो जाएगा।

बस तुम हिम्मत मत हारना।

dfork

कशिश—बटरफ्लाईज

बच्चों आओं बच्चों आओं कोरोना से न तुम घबराओं।

कोरोना को पहचानो उनके लक्षण चार जानो।

कोरोना को जब तुम जान जाओगे तब तुम वायरस को मार भगाओगे।

कोरोना के लक्षण चार खांसी, दर्द, सर्दी और बुखार।

अपने हाथों को अच्छे से धोना बीमार व्यक्ति से दूर रहना।

खासी हो तो मास्क पहनना।

कोरोना से दूर हैं रहना तो बाहर से आकर खूब नहाना।

बुखार हो तो डाक्टर को बुलाओं। कोरोना को तुम भगाओं।

जानकारी और सावधानी के साथ।

अब तुम हो जाओं तैयार ऐसे होगी कोरोना की

हार।

कोरोना को हराना हैं, जीवन की तरफ एक और कदम बढ़ाना हैं।

मिलजुल कर एक दूसरे का साथ निभाना है।

हर मुश्किल को आसान बनाना है।

दिलों की दूरीयां मिटाकर सबका विश्वास और हौसला बढ़ाना है।

कोरोना को हराना है। जीवन कि तरफ एक और कदम बढ़ाना है।

चाहे जो हो जाए इस संकट की घड़ी में दिल को मज़बूत बनाना है।

अपनी इच्छाओं को बेढ़ियों में जकड़कर पैरों पर ताला लगाना है।



bE; fuVh

कोरोना वायरस से लड़ने कि लिए हमारी इम्युनिटी का मज़बूत होना बहुत आवश्यक है। इस महामारी ने हम बच्चों के लिए काफी मुश्किलें खड़ी कर दी हैं। अब हम बच्चे बाहर भी नहीं जा पा रहे हैं। न ही खेल पा रहे हैं न ही अपने मित्रों से मिल पा रहे हैं। इस कोरोना कि वजह से कई लोगों कि जान भी जा चुकी हैं। परन्तु अभी भी लोग लॉकडाउन के नियमों का पूर्ण रूप से पालन नहीं कर रहे हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार अब कोरोना वायरस कि तीसरी लहर भी आने वाली हैं। अब हमें ज्यादा सावधान रहने कि आवश्यकता है क्योंकि यह लहर बच्चों को ज्यादा नुकसान पहुंचा सकती है। लॉकडाउन लगाने से सबसे ज्यादा नुकसान मजदूरों को होता है। उन का काम बन्द हो जाता है। और उनके पास जमा पूँजी भी नहीं होती है। हमरे पड़ोस में अगर ऐसे लोग हैं तो हमें इन लोगों कि मदद करनी चाहिए।

ykWmkmu ds dkj.k ijs kuh

ज़ेबा

नमस्कार दोस्तो मेरा नाम ज़ेबा हैं। मैं आपके साथ एक परिवार के बारे में कुछ साझा करना चाहती हूँ। मेरे समुदाय में एक लड़की हैं उसके तीन भाई और एक बहन हैं। वह सरकारी स्कूल की छात्रा है। लॉकडाउन के कारण उसको और उसके परिवार को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। पिछले वर्ष सरकार और संस्थाओं से काफी मदद मिली परन्तु इस वर्ष किसी भी प्रकार कि कोई मदद नहीं मिली। उसके पिताजी का काम बन्द होने कि वजह से घर कि आर्थिक स्थिति और खराब हो गई। पिताजी भी काफी परेशान रहते हैं। एक ही मोबाइल होने के कारण ऑनलाइन क्लास में काफी परेशानी आ रही है। पांचों भाइ—बहन एक ही मोबाइल कि वजह से अपनी क्लास नहीं कर पाते हैं। उनके लिए नेट रिचार्ज करना भी काफी मुश्किल होता है। इस प्रकार परिवार बहुत मुश्किलों का सामना कर रहा है।



, d dgkuh

संजीदा

मेरी एक सहेली हैं। वह दस भाई—बहन हैं। वे सभी अपनी माताजी के साथ रहते हैं। उसके पिताजी तीन साल पहले उन सभी को छोड़कर जा चुके हैं। ये सभी भाई—बहन सरकारी स्कूल में पढ़ाई करते हैं। लॉकडाउन कि वजह से उनकी माता का काम छूट चुका है। वे सभी किराये के मकान में रहते हैं। अब मकान मालिक भी किराये के लिये उनको तंग कर रहा है। उनका परिवार बहुत मुश्किलों का सामना कर रहा है। मोबाइल रिचार्ज करने के पैसे ना होने के कारण ये सभी क्लास भी नहीं कर पा रहे हैं। अगर ऐसा ही चलता रहा तो ये सभी ड्रोप आउट हो जाएंगे।



| | | |
|---|---|---|
| 4 | 3 | |
| 1 | 2 | 3 |
| 2 | 1 | |
| | | 2 |

| | | |
|---|---|---|
| 3 | | 2 |
| 4 | 1 | |
| 3 | 2 | |
| 4 | | 1 |

आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं

अगर आपकी उम्र 9 से 16 वर्ष के बीच हैं तो आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं।

अगर आप बाल पत्रकार के रूप में अपने आस-पास घट रही घटनाओं को इस अखबार के माध्यम से उठाना चाहते हैं तो आपका स्वागत है।

आप बच्चों से जुड़े किसी भी मुद्रदे पर अपने विचार, लेख, फोटो, वित्र आदि इसमें छापने को भेज सकते हैं शर्त बस इतनी है कि यह आपकी अपनी रचना होनी चाहिए। यह अखबार आपकी राय को दूर-दराज इलाकों तक पहुंचाने की पूरी-पूरी कोषिष्ठ करेगा।

आप अपनी रचना हमें लिखकर भेजें और जहां भी जरूरत हो संदर्भ का उल्लेख जरूर करें। आप अपनी रचना के साथ अपना नाम, उम्र, स्कूल/संस्था, पूरा पता फोन नम्बर आदि जरूर भेजें।

हमारा पता : संपादक मंडल, दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम्स, द्वारा बटरफ्लाइज़,
यू - 4 ग्रीन पार्क एक्स्टेंशन, नई दिल्ली - 110016

पुरस्कार : तीन सबसे अच्छी रचनाओं को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे

दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम्स संपादकीय दल

| | |
|-------------------------|---|
| मुख्य संपादक | |
| सुर्जा चौहान | - उद्यान केयर |
| सह संपादक | |
| प्रियंका वैध | - अंगजा फाऊंडेशन |
| समीर | - आलंब |
| नर्मदी मेहरा | - उद्यान केयर |
| उपसंपादक | |
| आसिफ | - सलाम बालक ट्रस्ट |
| अंशुल शर्मा | - वाई-डब्ल्यू सी.ए.आर डी.पी. |
| तनवीर शेख | - बटरफ्लाइज़ |
| शिवम | - बाल सहयोग |
| सुजीत | - कास्प दिल्ली यूनिट |
| वीशिता | - उद्यान केयर |
| संवाददाता | |
| रोहित | - सलाम बालक ट्रस्ट |
| दीपक चंद्र सिंह | - वाई डब्ल्यू सी. ए. दिल्ली (आर डी.पी.) |
| रफीक शेख | - बटरफ्लाइज़ |
| नुरुल | - बाल सहयोग |
| मनोस | - बाल सहयोग |
| विवेक | - बटरफ्लाइज़ |
| व्यस्क संपादकीय सलाहकार | |
| मुसुमी बरुआ | |

यह अखबार 9 से 16 वर्ष की उम्र के बच्चों द्वारा लिखित, संपादित एवं प्रकाशित है। इसका उद्देश्य दिल्ली एवं इसके आसपास के इलाकों को बच्चों के लिए सुरक्षित एवं दोस्ताना बनाना है। यह अखबार दिल्ली बाल अधिकार क्लब द्वारा बटरफ्लाइज़ के सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है।

दिल्ली बाल अधिकार क्लब C/O बटरफ्लाइज़, 163/4, प्रधान वाली गली, गॉव जौनापुर नई दिल्ली 110047

भारत फोन : +91-11-35391068, 69, 70 E-mail : butterflies@vsnl.com

परियोजना सहायता : Misereor Katholische Zentralstelle, Furenwicklungshilfe.V. Germany

क्वल निजी वितरण के लिए

सहयोग राशि: 5 रुपये